**Blueprint for "Safegaurd Bundali Ramila - a cultural heritage of Narsinghpur Janpad of M.P. under the scheme safegaurding the Intangible cultural heritage and diverse cultural traditions of India sanctioned under sanction letter no. 28-6/ICH-Scheme/43/2013-14/13671 Dated 31st March 2014.**

# बुंदेली रामलीला – म.प्र. के नरसिंहपुर जनपद की सांस्कृतिक विरासत

## 1. परिचय

"हरि अनंत हरि कथा अनंता" की तरह रामलीलाओं का संसार भी अनंत और अनगढ़ है, पूरे भारत में खेले जाने वाली रामलीलाओं की मूल कथा तो एक ही होती है परन्तु भारत के हर जनपद ने उसमें स्थानीय रंग भर दिये है, जिसकी वजह रामलीलाओं के विभिन्न रूप और विभिन्न प्रदर्शन शैलियाँ देश में विकसित हो गयी है। भारत के प्रसिद्ध तीन महाकाव्यों में (रामायण, महाभारत, गीता) रामायण[1]/रामचरितमानस[2] विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय है। रामायण, रामचरितमानस एवं राम को केंद्रित करके लिखी गयी ये रामलीलाऐं सदैव लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है, वजह श्रीराम का मर्यादित चरित्र, रामराज्य की कल्पना, इसमें व्याप्त नाटकीयता और करूणामयी एक रूपकथा।

सहज, सरल, सादगी से पूर्ण, आडम्बरहीन प्रस्तुति, मनोरंजन, ज्ञानरंजन और इसमें छिपा लोकदर्शन बुंदेली रामलीला को विशेष बनाता है।

ये रामलीलाऐं हमारी सांस्कृतिक धरोहर और जीवनशैली की आत्मा है। इस रामलीला को समझने से पहले हमें बुदेलखण्ड की भौगोलिक और सांस्कृतिक बनावट को समझना होगा। अध्ययनों से पता चलता है कि बुंदेलखण्ड की लोक संस्कृति भारत और विश्व के अनेक जनपदों की लोक संस्कृतियों से भी प्राचीन है, नर्मदा घाटी के भू–स्तरों की खोजों से यह सिद्ध हो जाता है कि– नर्मदा घाटी की सभ्यता, सिंधु घाटी की सभ्यता से बहुत पहले की है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, परम्पराओं एवं संस्कारों की दृष्टि से बुंदेलखण्ड बहुत ही विस्तृत प्रदेश है। बुंदेलखण्ड की स्थापना करने वाले महाराजा छत्रसाल के

अनुसार  यमुना, नर्मदा, चंबल और पूर्व क्षेत्र में बहती हुई टोंस (तमसा) नदी से घिरा हुआ और आजू–बाजू में पसरा हुआ इलाका बुंदेलखण्ड है। प्राचीन लोक संस्कृति का वाहक बुंदेलखण्ड वन्य, आर्य, अनार्य आदि के मूल्यों का समन्वय है। बुंदेली बोली, साहित्य, संगीत, परंपराऐं एवं कलाऐं काफी समृद्ध एवं गतिशील रही है।

बुंदेलखण्ड के नरसिंहपुर जनपद (सांस्कृतिक एवं परम्पराओं के आधार पर) का प्राचीन नाम गड़रियाखेड़ा था। इस कस्बे का संबंध महाभारत और रामायण काल की घटनाओं से रहा है, नर्मदा नदी के किनारे बसे नरसिंहपुर का संबंध आदि शंकराचार्य से है कहते है उन्होंने "गुरू गुफा" (जो कि नर्मदा के किनारे है) में बैठकर ही "नर्मदाष्टक" की रचना की। आचार्य रजनीश, पेंटर हैदर रजा, पंडित भवानी प्रसाद मिश्र और डॉ. रामकुमार वर्मा का संबंध नरसिंहपुर जनपद से रहा है। प्रदेश की जीवन रेखा माँ नर्मदा के कछार में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत की श्रृंखलाओं में पसरे हुए नरसिंहपुर कस्बे का राम मंदिर जिसके प्रांगण में ये रामलीलाऐं होती थी, उसका निर्माण हिन्दू वर्ष 1860 विक्रम संवत् है (अंग्रेजी सन 1803) गणना के अनुसार यह मंदिर 211 वर्ष पुराना है। मंदिर से जुड़े लोगों से मिली जानकारी के अनुसार 124 वर्षीय पुरानी बुंदेली रामलीला की शुरूआत वर्ष 1890 में हुई थी जो लगभग 111 वर्ष खेली गई, इतना लंबा रास्ता तय करने वाली यह रामलीला वर्ष 2002 में बंद हो गई।

सन् 1936 में रामलीला मंडल को लिपीबद्ध आलेख (Bound Scripit) मिल गया था, इस आलेख का संकलन, संपादन और अतिरिक्त लेखन रामलीला मंडल के स्व. श्री तुलसीराम अग्रवाल ने किया था, अतिरिक्त लेखन के तहत् स्व. श्री अग्रवाल ने गोस्वामी तुलसीदास लिखित रामचरितमानस[3] और राधेश्याम रामायण[4] को आधार बनाकर बुंदेली रामलीला की रचना की। श्री अग्रवाल की इस रचना में दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया के अलावा दीवारी, दादरे, राई (बुंदेली गायकी) सोहरे (संस्कार परक गीत) बन्ना–बन्नी (श्रृंगार परक गीत), विदाई गीत, पैर पखरई (वैवाहिक रिवाज), गारी (विवाह गीत) आदि को शामिल किया ताकि साहित्य में स्थानीयता आ सके, हास–परिहास, प्रहसन, एकालाप (Monolouge) से

भरपूर यह रामलीला नौटंकी शैली से प्रभावित थी, संगीत की प्रधानता के कारण इस रामलीला को संगीत नाट्य कहा जा सकता है, आंगिक एवं वाचिक अभिनय का प्रतिनिधित्व करने वाली यह लीला शरद ऋतु (क्वांर मास) में पड़ने वाली नवरात्रि से कुछ दिन पहले शुरू होती थी जो लगभग 15 दिन तो कभी 11 दिन अपनी सुविधानुसार खेली जाती थी। गणेश एवं माँ सरस्वती की आराधना के साथ पहले दिन का पाठ रावण दिग्विजय और नारद मोह होता था, उसके बाद दूसरे दिन राम जन्म और ताड़का वध होता था, फिर तीसरे दिन जनक नगर, पुष्पवाटिका (सीता दर्शन) होता था, चौथे दिन धनुष यज्ञ हुआ करता था, यह सबसे प्रसिद्ध लीला थी। इस दिन दूर दराज के ग्रामों के लोग इस लीला को देखने बड़ी तादाद में आया करते थे, फिर पांचवे दिन राम का वनगमन, छटवें दिन सीताहरण फिर अन्य लीलाओं को खेलते हुए रामलीला पूर्णता को प्राप्त करती थी। रावण के मारे जाने के बाद अंतिम दिन राम का राज्य अभिषेक नामक लीला हुआ करती थी, रावण के मारे जाने का दिन पूर्णतः निश्चित था– दशहरा (विजयादशमी का दिन) इसी दिन रावण मारा जावेगा। राम और रावण की लड़ाई मंच से होते–होते सड़क तक आ जाती थी और जुलूस का रूप ले लेती थी जिसे "रथारूढ़ युद्ध" भी कहा जाता था। इस जुलुस में नगर के सभी वर्गो के लोग शामिल हुआ करते थे, कालातीत में जुलुस के दौरान नगरवासी मूर्ति पात्रों का (राम, लक्ष्मण, भरत, सीता) स्वागत, वंदन–अभिनंदन किया करते थे, लोग इन पात्रों को भेंट दिया करते थे, इनकी आरती उतारा करते थे, चरण–स्पर्श किया करते थे। अतः ध्यान देने योग्य बात है कि मूर्ति पात्र करने वाले सभी अभिनेता ब्राम्हण वर्ग के होते थे।

पंडिताइन केवल कुंवर त्रिवेदी के विशेष सहयोग एवं सार्वजनिक चंदे से खेले जाने वाली इस रामलीला का इतिहास अद्भुत है। इस दौरान जनपद में अनेक स्थानों पर लगभग प्रत्येक बड़े ग्रामों में रामलीलाऐं आयोजित की जाती थी शायद आज भी इक्का दुक्का ग्रामों में कुछ रामलीलाऐं आयोजित हो रही है, जो कि इसी प्राचीन रामलीला से प्रभावित है।

## 2. उद्देश्य

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि इस बुंदेली रामलीला के साहित्यिक, सांस्कृतिक और प्रदर्शन शैली को विश्वसनीय सूत्रों एवं विभिन्न शोध के माध्यमों से जानना और आंकड़े एकत्र करना एवं उनका चित्रमयी दस्तावेजीकरण करना ताकि इन्हें भविष्य के लिए Safegaurd किया जाये और संदर्भ के रूप में उनका उपयोग हो सकें।

## 3. कार्यान्वयन

रामलीला से जुड़े तमाम लोगों से मिलकर बुंदेली रामलीला का विस्तृत अध्ययन एवं शोधकार्य होगा, विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए साक्षात्कार किये जायेंगे, "व्यास गादी" (रामलीला के मुख्य संचालक) के अधीन रहकर उनके मार्गदर्शन में रामलीला के साहित्यक मूल्यों और प्रदर्शन शैली को समझा जावेगा, बुंदेलखण्ड उसकी संस्कृति और रामलीलाओं की जानकारी रखने वाले लेखक, चिंतक कलाकारों से विचार–विमर्श के बाद इस ऐतिहासिक दस्तावेज को लिपिबद्ध किया जावेंगा।

## 4. कार्यक्षेत्र

मुख्यतः नरसिंहपुर जनपद (जिला) एवं वर्तमान में खेली जा रही इस जनपद की समस्त रामलीलाऐं।

## 5. समय अवधि

इस परियोजना को पूर्ण करने के लिए लगभग 6 माह का समय वांछनीय है।

"जुलाई 2014 से दिसम्बर 2014"

## 6. उपसंहार

भक्तिकाल की देन यह रामलीलाऐं लोक संस्कृति की संवाहक रही है। लोक जीवन की आत्मा रही है। इसके साथ–साथ नाट्य चेतना की जनक भी है। इनका विलुप्त होना और अमूर्त होना दुख का विषय है अतः इन विरासतों

को हमें संरक्षित करना ही होगा– भविष्य के लिए, बुंदेली जीवन शैली को बचाने के लिए।

## 7. संलग्न

1. रामलीला मंचन के छायाचित्र
2. राम मंदिर का छायाचित्र

सादर

**दिनांक : 24/05/2014**
**स्थान– नरसिंहपुर (म.प्र.)**

**पुनीत वि. त्रिवेदी**
शास. विवेकानंद महाविद्यालय के सामने
शंकराचार्य वार्ड, नरसिंहपुर (म.प्र.)
संपर्क 9425168605
Email- puneetvikram@gmail.com

**1. रामायण–बाल्मिकी द्वारा लिखित**
**2. रामचरितमानस–गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित**
**3. रामचरितमानस–व्यंकटेश्वर प्रेस बंबई द्वारा प्रकाशित**
**4. राधेश्याम कथावाचक द्वारा लिखित रामलीला**

# बुंदेली रामलीला
# म.प्र. के नरसिंहपुर जनपद की
# सांस्कृतिक विरासत

पुनीत वि. त्रिवेदी

"Safegaurd **Bundali Ramila - a cultural heritage of Narsinghpur Janpad of M.P.** under the scheme safegaurding the Intangible cultural heritage and diverse cultural traditions of India sanctioned under sanction letter no. 28-6/ICH-Scheme/43/ 2013-14/13671 Dated 31st March 2014.

*अध्याय - 01*

**बंदेलखण्ड**

1- बुंदेलखण्ड उद्‌भव और विकास
2- बुंदेलखण्ड भौगोलिक सीमा
3- बुंदेलखण्ड सांस्कृतिक सीमा
4- बंदेली संस्कति एवं लोक कलाएं-

*अध्याय-02*

**नरसिंहपर जनपद अतीत और वर्तमान**

1- नरसिंहपुर जनपद : उद्‌भव और विकास
2- नरसिंहपुर जनपद : वर्तमान स्वरूप
3- नरसिंहपुर जनपद की धरोहरें
क- ऐतिहासिक धरोहरें
ख- सांस्कतिक धरोहरें

*अध्याय-03*

**बंदेली रामलीला नरसिंहपर जनपद के संदर्भ में**

1- रामलीला परंपरायें
2- बुंदेली रामलीला
3- साहित्यिक पक्ष-
4- प्रस्तति पक्ष-

*अध्याय-04*

**साक्षात्कार**

*अध्याय-05*

**चित्रवीथिका**

**उपसंहार**

# बंदेली रामलीलाएं

रामलीला भगवान राम के संपर्ण जीवन की मंचीय प्रस्तति है।

श्रीराम का चरित्र सतानत हिन्द धर्म के द्वारा स्थापित 10 लक्षणों से यक्त है।

भगवान विष्ण के अवतारी श्रीराम  संपर्ण. मर्यादित और परुषों में उत्तम हैं.

इस बात का उल्लेख कवि बाल्मीकि की रामायण. तलसीदासकत रामचरित मानस और

अन्य भाषाओं की रामायण से मिलता है।

श्रीराम आज भी आज हिंदस्तान के आध्यात्मिक. धार्मिक एवं सामाजिक नायक हैं.

ऐसे नायक जिनकी गाथा रामकथा. मानस प्रवचन और लीला ( Play ) के माध्यम से

आज भी परे हिंदस्तान में और इसके बाहर खेली और सनी जाती है।

भारतवर्ष में राम की कथा कहने का सबसे लोकप्रिय माध्यम रामलीलाएं रही हैं।

भारत में खेले जाने वाली रामलीलाओं की कथा तो एक ही होती है.

मगर हर जनपद ने उसमे अपने स्थानीय रंग भर दिये हैं. परम्पराएं भर दी हैं.

जिसके फलस्वरुप देशभर में रामलीला के विभिन्न स्वरुप और प्रदर्शन शैलियां विकसित हई.

और आज विरासत के रुप में कहीं मर्त कहीं अमर्त रुप से विद्यमान हैं।

और **बंदेली रामलीला** भी इसी विरासत और परंपरा का हिस्सा है।

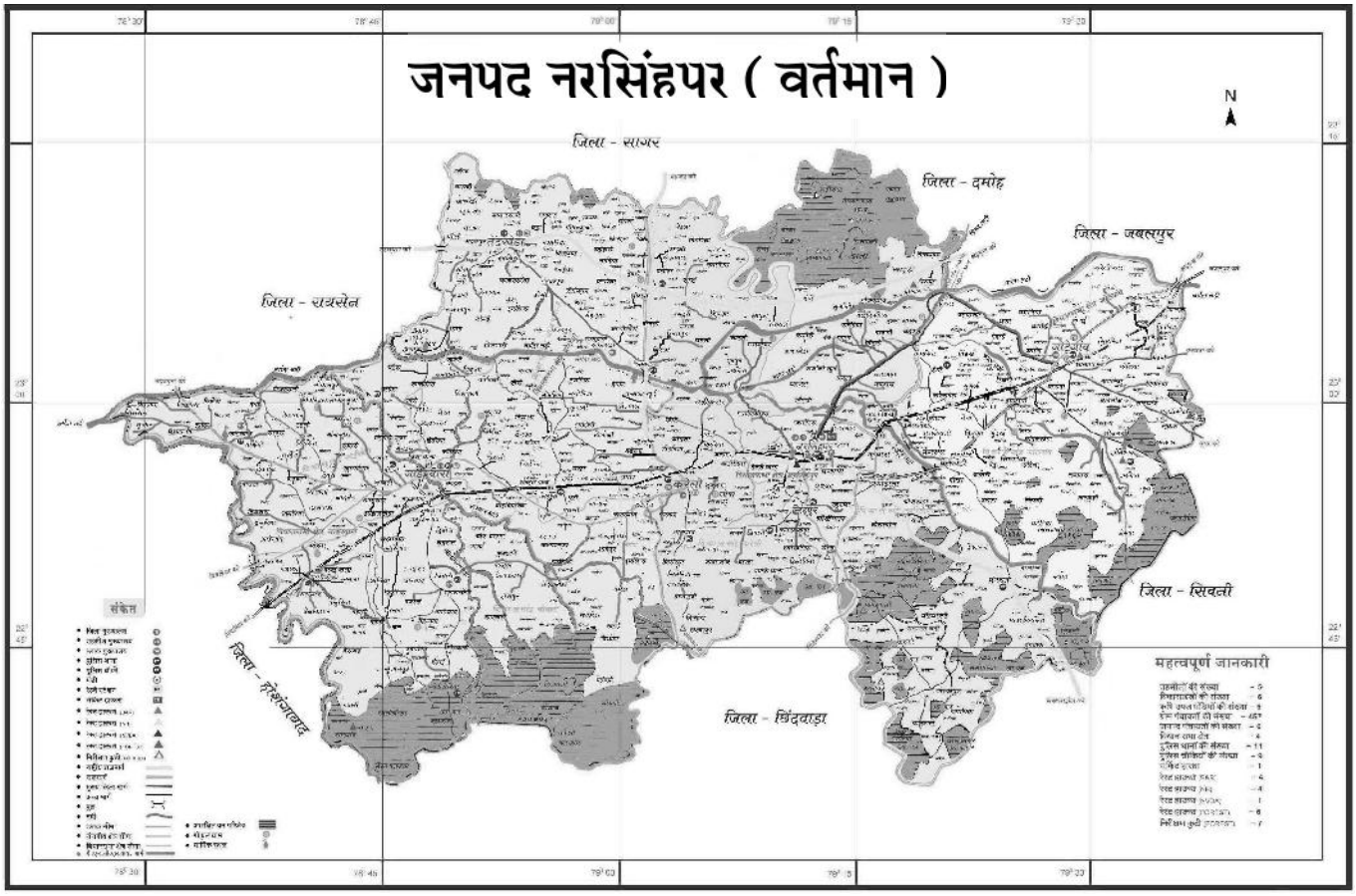


## नरसिंहपर जनपद अतीत एवं वर्तमान

### 1- नामकरण

वर्तमान नरसिंहपर मध्य भारत में स्थित मध्यप्रदेश का कस्बा है। वर्तमान यह जिला मख्यालय है। सत्रहवीं शताब्दी में बाजीराव पेशवा प्रथम ने जब हिन्द पदपादशाही की महिम चलाई तब राजस्थान. पंजाब. हरियाणा से विस्थापित होकर जाट समदाय के लोगों ने इस क्षेत्र में आना शरु कर दिया।

इतिहास के जानकार यह भी बताते हैं कि कछ जाटों ने मराठो की अधीनता स्वीकार करली। उसके एवज में उन्हें क्षेत्र प्रमख बना दिया और जागीरें बाँट दी गईं। सन 1782 में एक जाट बागी ने जो संभवत: मराठों का कोई पदाधिकारी था. ने चाँवरपाठा परगना को छोडकर गडरियाखेडा (वर्तमान नरसिंहपर) में अपना डेरा डाला और अपना कार्य क्षेत्र बढाया. तमाम उपक्रम कर उसने धन संग्रह किया. और एकत्रित राशि से उसने एक महल (बाखर) और भगवान नरसिंह के मंदिर का निर्माण कराया. भगवान नरसिंह जाटों के आराद्ध देव हैं। और इसी मंदिर के कारण गडरिया खेडा का नाम **नरसिंहपर** पडा।

## 2- प्राग ऐतिहासिक काल -

प्राग ऐतिहासिक परापाषाण यगीन खोजों से यह ज्ञात होता है कि इस भमि पर प्रागेतिहासिक काल से मानव का निवास रहा है। इस क्षेत्र में शल्क. क्रोड एवं सोन संस्कति के चिन्ह भी पाये जाते है। गाडरवारा के नजदीक 12 किमी उत्तर में भत्रा नामक स्थान पर सन 1872 ई. में पत्थर का एक तराशा हआ परस (फरसा) प्राप्त हआ था जिसके साथ किसी विलप्त जाति के पश का जीवाश्म (ढांचा)प्राप्त हआ था। जिसे शैलियन यग का माना जाता है।

इसी तरह नरसिंहपर के उत्तर पर्व में नर्मदा नदी के तटीय क्षेत्र (बरमान से झांसीघाट) पाषाण कालीन पत्थर के औजारों एवं वन्य प्राणियों के जीवाश्म मिले थे। इसी तरह जिले के ग्राम बिजोली में एक शिलाखण्ड पर गेरू एवं रोगन से बने वन्य प्राणियों एवं मनष्यों की अनेक मद्राओं के आदिम यगीन हस्तचित्रों से यह ज्ञात बात स्पष्ट होती है कि इस जिले की भमि पर हजारों वर्ष से मनष्यों का निवास रहा है।

## 3- पौराणिक यग-

पौराणिक ग्रंथों एवं जनश्रतियों के अनसार सतयग के असर राजा बलि की राजधानी ग्राम विल्थारी तहसील गाडरवारा मानी जाती है। माना जाता है कि यही असर राजा बलि ने यज्ञ के समय भगवान वामन को अपना सर्वस्व दान किया था । बरमान तहसील के निकट नर्मदा नदी के एक द्वीप पर बने पांच जलकण्डों के बारे में जनश्रति है कि वन प्रवास काल के समय पाण्डवों ने इस क्षेत्र में शरण ली थी तभी उन्होंने इन जलकण्डों का निर्माण किया था। जहां बने कछ मानव पदचिन्हों को भीम के पदचिन्ह माने जाते है। नरसिंहपर के पर्व में स्थित ग्राम बचई के समीप मानव मखाकति के समान एवं विशाल शिलाखंड को पाण्डव कालीन राजा कीचक जिसका भीम द्वारा द्रोपदी पर विषयासक्त होने के कारण वध किया था. का सिर कहा जाता। यह भी संभव है कि इस क्षेत्र का संबंध उस यग में राजा कीचक से रहा हो। इसी तरह ग्राम बरहटा के बारे में जनश्रति है कि यह पाण्डवकालीन राजा विराट की राजधानी थी। संभवत: विराट का अपभ्रंश विराट से विराटा. विरहटा और वरहटा हो गयो हो। यहां के प्राचीन तालाबों की सीढीयों के पत्थरों पर उत्कीर्ण. नक्काशी एवं अनेक स्थानों पर पडे प्राचीन महलों के चौकोर पत्थर तालाब के किनारे रखी भगवान सर्य की संदर मर्ति. पतली खोह एवं विराट टौरिया में मिल रही संदर पत्थर की मर्तियॉ एवं ध्वस्त महलों के अवशेष किसी प्राचीन कालीन समद्ध संस्कति के ज्वलंत प्रमाण है। इसी तरह ग्राम बरहटा से निकट ग्राम नौनियां के भग्न परकोटे के अंदर रखी सात जैन तीर्थकरों की विशाल भव्य मर्तियॉ प्राचीन जैन संस्कति की मक प्रमाण है।

## 4- मौर्य यग-

मौर्य यग की स्थापना सम्राट चन्द्रगप्त मौर्य ने (ईसा के 322 वर्ष पर्व) मगध के राजा नंद (घनानंद) के राज्य को

अपने अधिकार में लेकर की थी। इसी सम्राट ने यनान के पर्व आक्रमणकारी सिकन्दर द्वारा जीते गये देशों एवं राज्यों के साथ नर्मदा के सदर क्षेत्रों के साथ इस क्षेत्र की भमि को भी अपने राज्य का हिस्सा बना लिया था। इस कल का अंतिम शक्तिशाली राजा सम्राट अशोक (ईसा पर्व 273)था। रूपनाथ (तहसील बहोरीबंद) जबलपर से 50 किमी. पर अशोक काल के शिलालेख एवं सांची विदिशा के शिलालेख इस बात के प्रमाण हैं कि संपर्ण मध्यप्रदेश के साथ यह क्षेत्र भी सम्राट अशोक के राज्य का हिस्सा था। अशोक की मत्य के 47 वर्षो में ही इस कल के अंतिम राजा को उसके सेनापति पष्यमित्र शंग द्वारा मारकर मौर्य यग का अंत कर दिया था।

## 5- शंग यग-

पष्य मित्र शंग (ईसा पर्व 185 वर्ष) के पत्र अग्रिमित्र शंग (ईसा पर्व 149 वर्ष) जो एक वीर राजाधाविदर्भ के साथ नर्मदा के समस्त क्षेत्रों के साथ इस क्षेत्र पर भी अपना अधिकार कर लिया था । इस कल के अंतिम दसवें राजा देवभति को उसके मंत्री वसदेव कण्डव ने मारकर शंग राज्य का अंत कर दिया।

कण्डव यग- वसदेव कण्डव (ईसा पर्व 37 वर्ष)के राजा बनने के उपरांत इस कल के राजाओं की चार पीढियों के 45 वर्षो के राज्य का उल्लेख मिलता है।

## 6- आंध्र यग-

आंध्र जो एक प्राचीन राजकल था जिसकी राजधानी श्री काकोलम थी. के राजा (नाम अज्ञात) ने (सन 8 ई. में) अन्य क्षेत्रों के साथ इस क्षेत्र को अपने राज्य का हिस्सा बना लिया था। इस कल का राज्य इस क्षेत्र पर कब तक रहा अज्ञात है।

## 7- सातवाहन यग-

आन्ध्रों के पतन के बाद (ईसा की दसरी शताब्दी में) यह क्षेत्र सातवाहन राजाओं के राज्य का हिस्सा रहा है । नासिक प्रशस्ति के अनसार गौतमी पत्र सातकर्णि (सात वाहन)(सन 106 से 130 ईस्वी) ने अकरा (पर्वी मालवा क्षेत्र) अवन्ति (पश्चिमी मालवा क्षेत्र) विन्ध्य (नर्मदा के उत्तर का क्षेत्र ). सतपडा (नर्मदा के दक्षिण पश्चिम का क्षेत्र) जिसमें यह क्षेत्र भी आता था को अपने राज्य का हिस्सा बना लिया।

## 8- गप्त यग-

गप्त यग के महावीर सम्राट समद्र गप्त (सन 335 से 380 ई.) ने मध्य एवं समस्त दक्षिण भारत के साथ इस क्षेत्र पर भी अपना राज्य स्थापित कर दिया था । आगे समद्रगप्त के वंशज बद्धगप्त (सन 476 - 495 ई.) के एक सामंत शमश्क सोम (सन 518

से 528 ई.) के दो शिलालेख इस बात की पष्टि करते हैं कि राजा हस्तिन ने जिन 18 वन राज्यों पर अधिकार किया था उसमें यह क्षेत्र भी था। ईसा के छटवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गप्त राज्य का अंत हो गया।

## 9- कलचरि यग-

ईसा के सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कलचरि कल के राजा वामराज ने गौमती नदी से नर्मदा के एक बडे भभाग को. जिसे 'डाहल' कहा जाता था जो को चेदि देश में मिला लिया । इस कल के प्रमख राजाओं में कोकल्य प्रथम (सन 850 से 890 ई.) जो एक सर्वगण सम्पन्न वीर योद्धा था। कलचरि के वैभव. यश एवं प्रतिष्ठा में भारी वद्धि की और त्रिपरी (जबलपर के निकट) को अपनी राजधानी बनाया। कलचरि लेखों के अनसार इस कल के15 प्रसिद्ध राजाओं के नाम का ही उल्लेख है. जो तेरहवीं शताब्दी तक इस क्षेत्र पर राज्य करते रहे। इस कल के अंतिम राजा को उसके मंत्री सरभी पाठक द्वारा षडयंत्र करके मार डाला गया। इस तरह कलचरि यग का अंत हो गया ।

## 10- चंदेल यग-

कलचरियों के पतन के बाद यह क्षेत्र महोबा के राजा परमार्दि देव चंदेल के अधीन हो गया। परमार्दि देव के दो सामंत भाई जसराज एवं वच्छ राज जो प्रसिद्ध वीर आल्हा एवं उदल के पिता एवं चाचा थे. के अधीन रहा. जिन्होंने कोहानी (बोहानी) को अपना मख्यालय बनाया. यहीं पर एक यद्ध के अवसर पर राजा परमार्दि देव की रक्षा करते हये वीरवर जसराज ने वीरगति प्राप्त की थी। पथ्वीराज रासो के रचनाकार कवि चन्द्र ने अपने ग्रंथ में गढा (जबलपर) के किले का उल्लेख किया है जहां के एक भग्न महल को राजा जसराज का महल कहा जाता है इससे यह स्पष्ट है कि यह क्षेत्र कछ समय तक चंदेल राज्य का हिस्सा रहा है ।

## 11- मगल यग-

गौड सम्राज्य के पतन के बाद यह क्षेत्र आसफ खान के अधीन रहा। तत्पश्चात सात और सामंत इस क्षेत्र पर राज्य करते रहे फिर अकबर ने यह किला पर्व गौड राजा के वंशजों में से एक चंद्रशाह को पर्व गौड राज्य के दस जिले मगल सल्तनत को देने पर राज्य वापिस कर दिया और उन दस जिलों को लेकर बादशाह ने नया राज्य 'भोपाल राज्य' के नाम से बना लिया।

## 12- बन्देला यग-

चन्द्रशाह की मत्य के बाद गौडों द्वारा भमि जोतने हेत गाय का प्रयोग करने पर से ओरछा के राजा जझार सिंह ने सन 1634 ई. में चौरागढ पर आक्रमण कर दिया जिसमें चौरागढ के राजा प्रेमनारायण शाह की मत्य हो गई और बंदेला सेना ने सन किले पर अधिकार कर लिया। बंदेला सेना की विजय के उपलक्ष्य में किले के दक्षिणी भाग को आज भी 'बन्देला कोट'

कहा जाता है. लेकिन बन्देला सेना का अधिक समय तक किले पर अधिकार नहीं रह पाया. क्योंकि बादशाह शाहजहां द्वारा जझार सिंह से किले को मक्त कराने हेत प्रेमनारायण शाह के पत्र हिरदेशाह की मदद हेत अपने तीन सामंतों के साथ एक विशाल सेना भेज दी जिसमें कलटी (कजरोटी) नामक स्थान पर दोनों सेनाओं के बीच भीषण यद्ध हआ. जिसमें राजा जझार सिंह मारे गये और मगल सेना का इस पर अधिकार हो गया। इसके बाद सन 1644 ई. में मगल बादशाह शाहजहॉ ने सरदार खान को चौरागढ किले का किलेदार बनाया लेकिन वह उचित रूप से इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण नहीं रख सका। तब शाहजहॉ को मजबरीवश जझार सिंह के भाई पहाडसिंह को प्रमख बनाना पडा। पहाडसिंह के चौरागढ आने की सचना मिलते ही हिरदेशाह वहां से भाग रीवा की ओर चला गया। आगे उसके वंशजों ने रामगढ व गढा को अपना केन्द्र बना लिया धीरे-धीरे राज्य सीमित होता चला गया और इस कल के अंतिम गौड राजा नरहरशाह को मराठों ने कैद कर गौंड राज्य का अंत कर दिया।

## 13- मराठा यग-

सन 1785 में माधोजी भोसले ने 27 लाख स्वर्ण मद्रा में मण्डला और नर्मदा घाटी को प्राप्त कर लिया जो राधोजी भोसले/भोपाल नबाव/पिंडोरी सरदारों आदि की खींचतान और सैन्य शासन के क्रर दबाव में डबता उतराता रहा। यह संकटों और अस्थिरता का काल कहा जाता है। जिसमें लटपाट के साथ क्षेत्र की जनता का जबरदस्त शोषण हआ। अंतत: 1817 में ब्रिटिश शासन के अंतर्गत आ गया।

राजा नरहरशाह की कैद के बाद इस क्षेत्र में सागर के मराठों का प्रभाव बढने लगा। सन 1782 ई. के पश्चात एक जाट बागी जो संभवत: मराठों का कोई पदाधिकारी माना जाता है. ने चांवरपाठा परगना को छोडकर एक छोटे से गॉव जिसका नाम गडरिया खेडा था. जिसे बाद में छोटा गाडरवारा कहा जाने लगा था. में दिलहेरी एवं पिथेरा की लट की राशि से एक महल एवं भगवान नरसिंह का मंदिर बनवाया और उस मंदिर के नाम पर इस गॉव का नाम नरसिंहपर रख दिया। तब तक इस जिले को शहपरा के नाम से जाना जाता था। सन 1775 ई. मे नागपर के मराठा शासक मधोजी भोंसले ने पना दरबार से नर्मदा के इस क्षेत्र पर राज्य करने की सनद (अनमति) प्राप्त कर ली। आगे मधोजी के पत्र राधो जी ने संपर्ण गढा. मंडला. होशंगाबाद. नरसिंहपर. सागर. दमोह. तेजगढ पर अधिकार कर लिया। इस काल में पिंडारी लटेरे अमीर खान एवं नवाब खान की सेना द्वारा जनता पर लट शोषण के अत्योचारों में भारी वद्धि हो चकी थी। संपर्ण क्षेत्र में जंगल राज्य का बोलबाला था. तभी मराठों ने अपने सामंत सरदार सादिक अली खान को सन 1807 ई. में यह क्षेत्र सौंप दिया। सन 1809 ई. में पिंडारी लटेरों ने गाडरवारा का राधोजी भोंसला का सैन्य शिविर लट लिया तब सादिक अली ने नरसिंहपर के पर्व में श्रीनगर (तहसील गोटेगांव) को अपना मख्यालय बना लिया और श्रीनगर में तहसील की स्थापना कर दी इस तहसील के अंतर्गत 219 गांव थे। उस समय श्रीनगर की आबादी 10000 के लगभग थी। नवम्बर 1818 ई. में अमीरखान पिंडारी ने अपनी सेना सहित श्रीनगर पर आक्रमण कर दिया। लेकिन सादक अली के नेतत्व में मराठा सेना से हारकर उसे भागना पडा इसके बाद भी छटपट यद्ध होते रहे। मराठों के सबेदार

माधवराव सिंधिया (प्रथम)के दो प्रमख सामंत (1)चीत एवं(2) करीम खान को पिंडारियों के विरूद्ध मदद करने हेत उन्हें क्रमश: बारहा एवं पलोहा बडा की जागीरें दी गई। इसके बाद भी पिंडारियों के आक्रमण होते रहे और मराठे उन्हें दबाने में असमर्थ रहे। इसी बीच नागपर के मराठा शासक अप्पाजी भोंसले ने राज्य की बागडोर संभाली। उन्होंने बढते हये ब्रिटिश प्रभाव को पहले से ही समझकर उसे कमजोर करने हेत नियक्त जनरल हार्डिमेन को आदेश दिया कि वह नागपर में जाकर मराठा शासक को दबा दे। इसी तारतम्य में मराठा सेना की ब्रिटिश सेना से एक मठभेड जबलपर में हो गयी। दसरी ओर गाडरवारा से एक सेना लेफिटनेंट कर्नल मैक्रमोरीन की कमान में श्रीनगर पर आक्रमण करने हेत भेजी गयी। दसरी जिसने 5 दिसंबर 1818 ई. को यद्ध के पश्चात श्रीनगर पर अपना अधिकार कर लिया। इस यद्ध में 100 मराठा सैनिकों ने वीरगति प्राप्त की और इसी के साथ श्रीनगर का गौरव, वैभव एवं समद्धि समाप्त हो गयी। आज श्रीनगर में जो प्राचीन महलों एवं किलों के भग्नावशेष दिखते हैं उनमें से अधिकतर सेनायें चौरागढ पर आक्रमण करने हेत बढी। लेकिन मराठा सेना की मोर्चाबंदी देखकर कटनीति से उस पर 12 मई 1818 ई. को कब्जा कर पाई। फिर इस भय से कि कहीं मराठा सेना फिर इस पर कब्जा न कर ले इस गौरवशाली किले को नष्ट कर दिया। सन 1820 में नागपर के भोंसले पेशवा एवं सिंधिया के अधिकत जिलों को सागर नर्मदा क्षेत्र नाम दे दिया।

## 14- राजगौड वंश-

इस राजवंश के उदय का श्रेय यादव राव (यदराव) को दिया जाता है। जिनने चौदहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में गढा कटंगा में स्थापित किया और एक महत्वपर्ण शासन क्रम की नींव डाली। इस राजवंश में कल 48 शासक हए आखिरी शासक प्रसिद्ध शासक संग्राम शाह (1400-1541) ने 52 गढ स्थापित कर अपने साम्राज्य को सदढ बनाया। राज्य का विस्तार करके मंडला को अपनी राजधानी बनाया। जिले में चौरागढ (चौगान) किले का निर्माण भी उसने ही कराया था। जो रानी दर्गावती के पत्र वीरनारायण की वीरता का मक साक्षी है।

संग्राम शाह के उत्तराधिकारियों में दलपत शाह ने सात वर्ष तक शासन किया। उसके पश्चात उसकी वीरांगना रानी दर्गावती ने राज्य संभाला और अदम्य साहस एवं वीरतापर्वक 16 वर्ष (1540- 1564)शासन किया। सन 1564 में अकबर के सिपहसलार आतफखां से यद्ध करते हये रानी ने वीरगति पाई। गढा कटंगा राज्य पर 1564 में मगलों का अधिकार हो गया गौंड, मगल और इनके पश्चात यह क्षेत्र मराठों के शासन काल में प्रशासनिक और सैनिक अधिकारियों तथा अनवांशिक सरदारों में बंटा हआ रहा। जिनके प्रभाव और शक्ति के अनसार इलाकों की सीमाएं समय-समय पर बदलती रहती थीं।

जिले के चांवरपाठा, बारहा, साईंखेडा, शाहपर, सिंहपर, श्रीनगर और तेंदखेडा इस समचे काल में परगानों के मख्यालय के रूप में प्रसिद्ध रहे।

## 15- ब्रिटिश यग-

सन 1925 ई. में नरसिंहपर को जिला बना दिया। मराठा यग से अधिक जिले के निवासियों पर ब्रिटिश शोषण व बर्बर अत्याचारों में वद्धि हो गयी। विलियम स्लीमेन के अनसार-कषकों की कठिनाइयों पर बिना विचार किये इतनी कठोरता की गयी कि किसान गांव छोडकर भाग गये दसरी ओर ठगों. डाकओं एवं पिन्डारियों की लट से जिले के निवासी भयभीत हो चके थे। यहां ठग. मसलमान. फकीरों. हिन्द साधओं एवं व्यापारियों के वेश में रहते थे जो कि एक विशेष तरह के रूमाल एवं रेशम की डोरी को गले में डालकर निर्दयता पर्वक उनकी हत्या कर देते थे और लट लेते थे इसके लिये करेली के निकट मडेसर का छोटा सा वन प्रसिद्ध था जो बडे-बडे हत्याकाण्डों का मक गवाह था। स्लीमेन ने 1826 से 1835 ई. के मध्य दो हजार पिंडारियों. ठगों एवं डाकओं को फॉसी पर चढाया जिससे जिले में कछ शांति स्थापित हई। इसी वर्ष राजस्व बंदोवस्त के कार्य हेत कर्नल ओसले की 20 वर्षीय भमि बंदोबस्त योजना बनायी गयी। सन 1836 ई. में नरसिंहपर जिले का विलय होशंगाबाद जिले में कर दिया गया।

## 16- बंदेला विद्रोह-

सन 1842 ई. का समय जहां एक ओर ब्रिटिश सरकार देश पर अधिकार करने की योजना बना रही थी वहीं दसरी ओर अनेक राजा. महाराजा. जागीरदार एवं देशभक्त ब्रिटिश सरकार को निकालने हेत प्रतिबद्ध हो रहे थे। अंदर ही अंदर आग सलग रही थी और इसी का परिणाम था बंदेला विद्रोह. जो अंग्रेजों द्वारा एक असंभव राशि वसलने के आदेश देने पर से दो स्वाभिमानी राजपतों उत्तरी सागर क्षेत्र चंदनपर के ठाकर जवाहर सिंह बंदेला एवं नारहटा के मधकर शाह के नेतत्व में प्रारंभ हो गया। जिसमें दमोह. सागर एवं इस जिले के नर्मदा क्षेत्र के अनेक वीर शामिल हो गये जो छापामार यद्ध द्वारा अंग्रेजों को पछाड रहे थे। इस विद्रोह का सर्वाधिक प्रभाव चांवरपाठा क्षेत्र पर हआ. जहां का प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजों को भगाने हेत कटिबद्ध था। वह लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मदनपर के गौड राजा डेलनशाह साथ दे रहे थे जिन्होंने चांवरपाठा और तेंदखेडा पर अधिकार कर लिया। इसी समय हीरापर के गौड राजा हिरदेशाह एवं राजा गजराज सिंह गजपरा द्वारा ब्रिटिश पलिस चौकी के साथ जबलपर नरसिंहपर के दोनों तटों के नर्मदा क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। 22 दिसम्बर 1842 ई. को हिरदेशाह को उसके परिवार के साथ पकड लिया गया और सागर ले जाकर फॉसी दे दी गयी। दसरी तरफ कप्तान बेकमेन नारहटा के मधकरशाह बंदेला को पकडने में सफल हो गया और उन्हें भी सागर जेल में फॉसी दे दी गयी। इस विद्रोह के समय ठाकर मर्दन सिंह बंदेला द्वारा देशभक्तों को दिया गया अप्रत्यक्ष सहयोग हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा। सन 1843 ई. में बडी मश्किल में स्वतंत्रता संग्राम को दबाया जा सका। इसी वर्ष ग्वालियर के राजा सिंधिया ने अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे पाश्विक दमन के विरूद्ध यद्ध छेड दिया जिसे महाराजपर का यद्ध कहा जाता है। उस समय अंग्रेजों को अपनी भल का अहसास हआ और फिर दोनों ओर से यद्ध विराम हो गया तथा उन्हें जनता पर कठोर कार्यवाही बंद करना पडी।

## 17- 1857 का विद्रोह-

1857 का महान विद्रोह देशभक्तों. राजा. महाराजाओं. जमींदारों एवं जनता द्वारा अंग्रेजों को देश से बाहर भगाने का संयक्त प्रयास था कि किसी भी तरह अंग्रेजों को देश से बाहर भगाया जाये इसी संदर्भ में 1857 में कमलपष्प एवं रोटी जो अंग्रेजों के विरूद्ध यद्ध हेत तैयार रहने के संकेत थे। एक गांव से दसरे गांव गप्त रूप से भेजे जा रहे थे । फरवरी में ऐसी ही रोटी की सचना नरसिंहपर में केप्टिन टर्नन को मिली लेकिन उसने घमंडवश इस ओर ध्यान नहीं दिया। अगस्त 1857 ई. को जब भोपाल राज्य और सागर के विद्रोहियों ने तेंदखेडा पलिस थाने को लट लिया तब 28वी मद्रास देशी पैदल सेना की 2 कम्पनियों को नरसिंहपर की रक्षा हेत बलाया गया। 52 वीं देशी पैदल सेना के विद्रोही वीर सिपाही श्री गजाधर तिवारी द्वारा अंग्रेजी सेना के विरूद्ध बगावत करने के अपराध में उन्हें 10 अक्टबर सबह 5 बजे पलिस परेड मैदान नरसिंहपर में तोप से उडा दिया जिससे जन आक्रोश फैल गया। उसी समय भोपाल के नवाब अली खान ( नवाब आदिल मोहम्मद खान) 150. नरबर सिंह डिलवार. वलभद्र सिंह सहजपर एवं 500 सैनिकों सहित तेंदखेडा पलिस चौकी को लट लिया। दसरी ओर हीरापर के मेहरबान सिंह 52 पैदल देशी सेना के 200 विद्रोही सिपाहियों के साथ आक्रमण कर दिया तीसरी ओर से शिवबक्ष सिंह लोधी के नेतत्व में आक्रमण करने से नरसिंहपर तीन दिशाओं से घिर गया। कैप्टन टर्नन की दो कंपनियों कैप्टन बली के नेतत्व में भेजी गई। मेहरबान सिंह द्वारा नर्मदा तट पर बसे ग्राम सांकल के छोटे से किले पर अधिकार कर लिया गया। जिसे एक यद्ध के बाद अंग्रेजों ने उसे छीन लिया। 18 नवम्बर को कैप्टन टर्नन ने नरबर सिंह के ग्राम ढिलवार पर कब्जा कर उन्हे फॉसी पर चढा दिया। 20 नवम्बर को ब्रिटिश सेना ने तेंदखेडा पर अधिकार कर उसका प्रबंध इमझिरा के राव सरजसिंह को सौंप दिया फिर भी मेहरबान सिंह की गतिविधियां जारी रहीं. तभी एक और विद्रोही दल-गंजनसिंह पकड गये और उन्हें ग्राम सांकल मे एक आम के वक्ष पर लटका कर फॉसी दे दी गयी। 9 जनवरी 1858 को राहतगढ भोपाल के चार हजार विद्रोहियों जिनके साथ आदिल मोहमम्द खान. सागर के बहादर सिंह. मदनपर के डेलनशाह. हीरापर के नरवरसिंह ने 250 घडसवारों के साथ पन: तेंदखेडा पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों की ओर से निष्ठावान विन्द्राप्रसाद की मातहती में निजामशाह मदनपर. एवं राव सरत सिंह इमझिरा ने विद्रोहियों को रोकने का प्रयास किया. लेकिन उन्हें असफल होकर भगना पडा इस तरह इमझिरा एवं तेदखेडा पर तीसरी बार विद्रोहियों का अधिकार हो गया यह समाचार सनकर कैप्टन टर्नन ने एक बडी 28वीं देशी पैदल सेना के साथ इमझिरा और तेंदखेंडा पर आक्रमण कर दिया और विद्रोहियों को राहतगढ की तरफ ढकेल दिया फिर उसने मदनपर पर आक्रमण कर डेलनशाह के पत्र और पौत्रों को पकडकर वहीं फांसी पर लटका दिया। मई 1858 ई. में राजा डेलनशाह भी पकडे गये और उन्हें भी फॉसी दे दी गयी। इस तरह एक ही परिवार की तीन पीढियों का स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान हआ। अंग्रेजी सरकार द्वारा फाँसियों का यह सिलसिला जारी रहा जब तक एक-एक विद्रोहियों को पकड न लिया गया।

## 18- स्वतंत्रता संग्राम-

1885 ई. में बौद्धिक. सांस्कतिक. जागरण एवं चेतना हेत बनाया गया संगठन कांग्रेस जो मात्र जागरूक बद्धिजीवियों तक सीमित था। उसे 1905 ई. में लार्ड कर्जन द्वारा किये गये बंगाल विभाजन से एक नई दिशा मिल गयी उसने स्वदेशी अपनाने एवं विदेशी सामान का बहिष्कार जैसी नई सोच को जन्म दिया। जबलपर में सन 1907 ई. नागपर के समाचार पत्र हिन्द केसरी द्वारा बंगाल विभाजन के विरोध में छपे लेखों का इस क्षेत्र पर विशेष प्रभाव पडा। नरसिंहपर सन 1918 ई. में कलेक्टर आई.जी. वोर्न द्वारा आंदोलन कचलने हेत बडे अत्याचार किये गये। जिनके बारे में जबलपर के एक समाचार पत्र कर्मवीर में एक लेख छपा जिससे संपर्ण देश में एक सनसनी फैल गयी। सन 1918 ई. में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के पनर्गठन में माणिकचंद्र कोचर को सदस्य चना गया। सन 1920 ई. में श्री राघवेन्द्र राव. डॉ. मन्जे. श्री माखनलाल चतर्वेदी. विष्णदत्त शक्ल. चौ. दौलतसिंह ने असहयोग आंदोलन करने का निर्णय लिया। सन 1923 ई. में कांग्रेस स्वयं सेवकों ने नागपर सत्याग्रह में भाग लिया। सन 1924 में हो रहे बरमान के एक सम्मेलन में कलेक्टर द्वारा मल फेंकने की योजना बनायी गयी जिससे सम्मेलन में अवरोध पैदा हो जाये. लेकिन जब देखा हजार की संख्या में आने जाने वाले ग्रामीण जन अस्त्र-शस्त्र के साथ सम्मेलन में पहंच रहे हैं तो उसे अपनी योजना रोकनी पडी। इसी बदले की भावना से प्रेरित होकर पंडित गयादत्त शास्त्री चौराखेडा. चौधरी शंकरलाल दबे ने एक दल का गठन किया जिसमें जिले के यवकों का बडा सहयोग रहा जिसमें जिले के अधिकतम मालगजारों का सहयोग रहा। 4 जनवरी 1932 में गॉधीजी की गिरफतारी के बाद होने वाले आंदोलन को कठोरता से दबाया गया। जिसमें शारीरिक व आर्थिक दण्ड दिये गये। सन 1933 ई. में महात्मा गांधी द्वारा जिले का दौरा करने से आंदोलन में नई चेतना का संचार हआ। इस आंदोलन में रेल्वे स्टेशन करकबेल के स्टेशन मास्टर गणेश प्रसाद व्यास का सहयोग हमेशा ही इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता रहेगा। इसी दौरान जिले में एक ऐसी घटना घट गयी जिससे अंग्रेजी सरकार के छक्के छट गये। नरसिंहपर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वीर छोटेलाल काछी द्वारा नरसिंहपर सिविल कोर्ट पर झंडा फहराने की घोषणा कर दी और निश्चित समय पर अंग्रेजी सरकार के कडे प्रबंध की परवाह न करते हए अपनी जान हथेली पर रखकर उसने राष्टीय ध्वज फहरा दिया। इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और छः माह का कठोर कारावास दिया गया। सन 1935 ई. में न्य इंडिया एक्ट लाग होने पर सन 1937 के चनाव में कांग्रेस को प्रचंड बहमत मिला और उसने मंत्रिमंडल बना लिया। सन 1939 ई. में विश्वयद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने मित्र राष्टों का साथ दिया. जबकि देश की जनता धरी राष्टों का साथ देना चाहती थी. इस बात पर से सरकार से विरोध होने पर कांग्रेस मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। जिसका इस क्षेत्र के जनमानस पर विशेष प्रभाव पडा।

सन 1940 ई. में महात्मा गांधी के नेतत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड दिया गया जिसकी आग से संपर्ण नरसिंहपर जिला जलने लगा। राष्ट्र प्रेम की बलिदानी भावना से प्रेरित होकर ठाकर रूदप्रताप सिंह मानेगांव. ठा. निरंजन सिंह मडेसर. चौ. पोहप सिंह बासनपानी. चौ. किशोरीलाल नेमा( सदर साहब) एवं चौधरी राजा भैया मेख. पंडित शंकर दत्त तिवारी एवं पंडित

कंदन लाल तिवारी मंगली. हरिनारायण राठी गाडरवारा. बाला प्रसाद पचौरी नरसिंहपर. श्यामसंदर नारायण मशरान. द्वारका प्रसाद अग्रवाल. श्यामलाल जायसवाल. भीकमचंद सिंघवी. शिखरचंद वर्डिया गोटेगांव. चौधरी हिम्मत सिंह जी सिमरिया जैस तीन सौ ग्यारह यवक इस आंदोलन में कद पडे तभी रूदप्रताप सिंह द्वारा अपने विश्वस्त कर्मचारियों ठा. सरत सिंह राजपत तरवारा. हेमराज झारिया एवं सखराम विश्वकर्मा मानेगांव के द्वारा कम्हडा रेल्वे पलिया को बम से उडाने का प्रयास किया। लेकिन दर्भाग्यावश टेन निकालने के बाद में पलिया गिर गयी. इससे ब्रिटिश सरकार में सनसनी फैल गयी और अंग्रेजी पलिस द्वारा गिरफ्तारियां की जाने लगीं। तत्कालीन एस.डी.ओ.पी. पलिस करतारनाथ ने मानेगांव में पलिस के साथ धावा बोल दिया. लेकिन ठा. रूद्रप्रताप सिंह के साले श्री ठा. शिवनारायण सिंह की कशलता के कारण घर में किसी तरह का सबत अंग्रेजी सरकार नहीं जटा पायी. लेकिन शको-सबहा में ठा. साहब के अंतरंग मित्र द्वारका प्रसाद अग्रवाल को गिरफ्तार कर यातनायें दी गयीं. परंत पलिस को कोई सराग नहीं मिला। उसी समय किसी साथी द्वारा पलिस को गप्त सचना देने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें छः माह कारावास हेत जबलपर सेन्टल जेल में रखा गया। सन 1942 ई. महात्मा गांधी द्वारा ठाकर रूद्रप्रताप सिंह जी को नरसिंहपर स्वतंत्रता संग्राम का सेनापति घोषित कर दिया गया। जिससे अंग्रेजी सरकार सशंकित हो गयी और उन्हें नागपर सेन्टल जेल भेज दिया गया। जहां गांधी एवं विनोबा भावे के सानिध्य में उनके जीवन में एक नई चेतना का संचार हआ।

9 अगस्त 1943 को भारत छोडो आंदोलन की दसरी सालगिरह के अवसर पर श्री अर्गल प्रभारी थाना ठेमी द्वारा एस. डी. ओ. पी. नरसिंहपर को मानेगांव में हो रही आंदोलनात्मक गतिविधियों एवं तोडफोड संबंधी सचनायें भेज दी गयी जिसमें रूद्रप्रताप सिंह एवं उनके साथियों को नरसिंहपर पहॅचने का आदेश दिया गया। जब नरसिंहपर थाने में एस. डी. ओ. पी. ने उनसे जानकारी चाही तो उन्होंनें कहा हम अपनी पार्टी के निर्देशों का पालन कर रहे हैं आगे भी करेंगें। इस पर उन्हें पनः गिरफ्तार कर लिया गया और सेन्टल जेल जबलपर भेज दिया गया। जहां उन्हें अपराधियों के साथ रखा गया फिर उन्हें आंदोलन न करने एवं ब्रिटिश सरकार का साथ देने के लिये मनाया गया अनेक तरह के प्रलोभन दिये गये यातनायें दी गयीं। ब्रिटिश सरकार उन पर प्रभाव डालने में असमर्थ रही उन्हें छोडना एवं सजा देने से दोनों स्थितियों में आंदोलन की आग ज्वाला बन सकती थी। वह वीर निर्भीक थे एवं शान से एक सांकेतिक भाषा द्वारा जेल के बाहर रह रहे अपने साथियों का नेतत्व करते रहे। 10 अगस्त 1940 को अंग्रेज सरकार ने कांग्रेस को गैरकाननी घोषित कर दिया कांग्रेस के करेली मख्यालय पर तलाशी लेकर अभिलेख जब्त कर श्री रघनाथ सिंह किलेदार भगवारा को गिरफ्तार कर लिया गया. लेकिन ठा. निरंजन सिंह को गिरफ्तार नहीं किया जा सका। वह भमिगत हो गये।

18 अगस्त 1942 ई. को भी श्री बाबलाल जैन एवं नर्मदा प्रसाद की गिरफ्तारी से ग्राम चीचली में गिरफ्तारी का

विरोध करती उग्र भीड पर ब्रिटिश पलिस द्वारा गोली चलाने से मंशाराम एवं गौराबाई की मत्य हो गई। 1942 को ग्राम कोडिया में एक विशाल सभा का आयोजन करने पर अनेकों को गिरफ्तार किया गया। हर तरह से निराश अंग्रेजी शासन ने आखिर वह काला दिन दिखा दिया जब जिले को ज्ञात हआ कि ठा. रूद्रप्रताप सिंह चेचक से पीडित हैं। ऐसे अवसर पर ब्रिटिश सरकार जनता से सहानभति प्राप्त करने की दष्टि से उन्हें जेल से छोडने हेत तैयार हो गयी इस शर्त पर कि वे अपने किए पर माफी मांगें. लेकिन ब्रिटिश सरकार की इस शर्त की अपेक्षा उन्होंने जेल में ही मरना सहर्ष स्वीकार कर लिया और वह काला दिन आया जब जेल में 29 मार्च 1945 सायं 5 बजे उनकी मत्य हो गयी। इस तरह आजादी के स्वतंत्रता संग्राम में जिला नरसिंहपर से अंतिम आहति के रूप में उनका 29 वर्ष की अल्प आय में बलिदान हआ। रूद्रप्रताप सिंह की शहादत के 2 वर्ष 4 माह 16 दिन बाद 15 अगस्त 1947 ई. को भारत स्वतंत्र हो गया।

## नरसिंहपर जनपद वर्तमान में

## जनपद के परातन धरोहरें

नरसिंहपर मध्यप्रदेश के केन्द्र में स्थित एक शहर है। यह नरसिंहपर जिला मख्यालय भी है। मध्यप्रदेश के मध्य में स्थित नरसिंहपर 50000 वर्ग किमी. के क्षेत्रफल में फैला राज्य का प्रमख जिला है। उत्तर में विन्ध्याचल और दक्षिण में सतपडा की पहाडियों से घिरे नरसिंहपर पर प्रकति खब मेहरवान हई है। पवित्र नर्मदा नदी के जिले की खबसरती में वद्धि करती है। प्राचीन काल में यहां अनेक वंशों ने शासन किया था। महान वीरांगना रानी दर्गावती के काल में यह स्थान काफी चर्चित रहा था। यहां अनेक ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। नरसिंहपर मंदिर. ब्राह्मण घाट. झोतेश्वर आश्रम और डमरू घाटी यहां के लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

### चौरागढ किला-

गोंड शासक संग्राम शाह ने इस किले को 15वीं शताब्दी में बनवाया था। यह किला गाडरवारा रेलवे स्टेशन से लगभग 19 किमी. दर है। वर्तमान में प्रशासन की उपेक्षा के कारण किला क्षतिग्रस्त अवस्था में पहंच गया है। किले के निकट ही 6 विशाल प्रतिमांए देखी जा सकती है।

### बिटिश कालीन इमारत-

इस इमारत की आधार शिला 15-12-1919 में डिप्टी कमीशनर जे.जी. ब्राउनी (ईएसक्य. आई.सी.एस.)की पत्नी जे.सी.ब्राउनी के द्वारा रखी गई और दिनांक 4.7.1921 को सेंटल प्रोवेंसेस (Provinces)के गर्वनर सर फ्रेंक जार्ज स्ले ने इस इमारत का शभारंभ किया उस समय यह डिप्टी कमीशनर का कार्यालय हआ करता था। कर्नल स्लीमन ने लगभग 1830 से 1836 के बीच इस जनपदका कार्यभार संभाला. और लटपाट आगजनी से छटकारा दिलाया। आपने कई जिलों का निर्माण भी कराया जहाँ बनियादी शिक्षा की व्यवस्था थी। कर्नल स्लीमन का नाम ठग एवं पिंडारियों के खातमें के लिए जाना जाता है। इस जनपद में और भी ब्रिटिश कालीन इमारतें हैं पर वो अपने मल रूप में नहीं हैं उन्हें आधनिक तरीके से संशोधित कर उपयोग की जा रही है।

# परातत्व से भरपर बरहटा

बरहटा तथा उसके निकट स्थित ग्राम नोनिया का विशेष परातत्विक महत्व है। कभी इस क्षेत्र में प्राचीन अवशेष बडी मात्रा बिखरे पडे थे। कहा जाता है कि सन 1865-70 के दशक में जब मध्य रेलवे की रेल लाईन (ग्रेट पेनिन्सला रेल्वे) बंबई से हावडा के बीच बन रही थी। तब रेल्वे के ठेकेदारों ने अधिकांश अवशेष वहां से उठा लिए थे। शेष नक्कासीदार और शिल्पयक्त पत्थरों में से उत्तम बहत समय पहले यरोप महाद्वीप के उद्दमी पर्यटकों के द्वारा बर्लिन और वारसा ले जाया चका है। बरहटा से हटाकर कछ मर्तियां नरसिंहपर के सभाष पार्क तथा नगरपालिका परिषद में रखी हैं। अनेक महत्वपर्ण कलाकतियों में से कछ अंतत: केन्द्रीय संग्रहालय नागपर (सेन्टल म्यजियम) भेज दी गई हैं।

बरहटा में 24 जैन तीर्थंकरों की मर्तियां भी थीं। यहां दरवाजों के पत्थरों की चौखटों, स्तंभों तथा प्रस्तरों पर उत्कीर्ण सैकडों जैन शिल्पकतियां प्राप्त हई हैं। ऐसा कहा जाता है कि किसी समय बरहटा ग्राम में सर्य देवता को समर्पित एक दलर्भ मंदिर विद्यमान था। इस देवता की संदर नक्कासी की मर्ति इस गांव में बरहटा आबादी के पर्व में स्थित विशाल तालाब के निकट प्राप्त हई। इस स्थान में एक पराने महल के अवशेष भी हैं। जिसके संबंध में सामान्यत: यह विश्वास किया जाता है कि यह राजा विराट का था। जिसकी राजधानी बरहटा थी।

## नरसिंह मंदिर

18 वीं सदी में जाट सरदारों ने इस ग्राम में एक महल (बाखर) और भगवान नरसिंह के मंदिर का निर्माण कराया. भगवान नरसिंह जाटों के आराद्ध देव हैं। और इसी मंदिर के कारण गडरिया खेडा का नाम **नरसिंहपर** पडा।

## राम मंदिर

नरसिंहपर जनपद के ग्राम कंदेली में स्थित भगवान श्रीराम का मंदिर का निर्माण कानपर के कानकब्ज ब्राह्मण द्वारा कराया गया है। मंदिर कानपर में बने राममंदिर प्रतिकति प्रतीत होती है।

## राम मंदिर का शिला आलेख

मंदिर की दीवार में लगे शिलालेख के अनसार इसका निर्माण हिंद वर्ष 1860 विक्रम संवत (1803 ई.)है। गणना के अनसार यह मंदिर 211 वर्ष पराना है। मंदिर से जडे लोगों से मिली जानकारी के अनसार 124 वर्षीय परानी रामलीला की शरुआत इसी मंदिर के प्रांगण से शरु हई थी।

# जनपद के गौरवशाली मेले

## मेला-

मेला भारत वर्ष की प्राचीनतम परम्पराओं में से है. नदियों किनारे पैदा हई संस्कति ने कई परम्पराओं मान्यताओं और अनभवों को पोषित और विस्तारित किया है। इस डिजिटल यग में आज भी हिन्दस्तान में मेला आस्था संस्कति परम्परा और दैनिक जरुरतों को परा करने का केन्द्र है।

### 1- बरमान मेला ( सकरांत को मेला )-

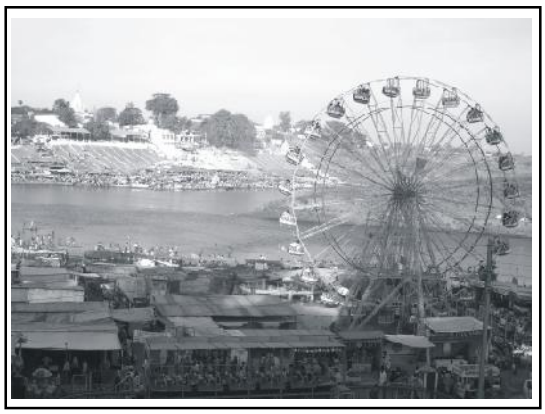

नरसिंहपर जिला मख्यालय से 32 किलोमीटर की दरी पर बरमान में नर्मदा नदी के तट पर प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर एक माह तक वहद मेले का आयोजन होता है। इसमें महाकौशल विंध्य व बंदेलखंड के अलावा महाराष्ट्र उत्तरप्रदेश आदि अन्य राज्यों से आये लोग भी अपनी मौजदगी दर्ज कराते हैं। जो मकर संक्रांति से बसंत पंचमी भरता है। नरसिंहपर जिला मख्यालय से 32 किलोमीटर की दरी पर बरमान में नर्मदा नदी के तट पर प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर एक माह तक वहद मेले का आयोजन होता है। इसमें महाकौशल विंध्य व बंदेलखंड के अलावा महाराष्ट्र उत्तरप्रदेश आदि अन्य राज्यों से आये भी अपनी मौजदगी दर्ज कराते हैं। जो मकर संक्रांति से बसंत पंचमी भरता है। नरसिंहपर जनपद का बरमान मेला भी मल्यों व परंपरा संग सदियों का सफर परा कर चका है। इस मेले की शरुआत कब हई इसका कोई ऐतिहासिक दस्तावेज तो उपलब्ध नहीं है लेकिन जनश्रुति के आधार पर यह मेला आठ सदियों के पडाव पार कर चका है।

यहाँ आज भी 12वीं सदी की वराह प्रतिमा और रानी दर्गावती द्वारा ताजमहल की आकति का बनाया मंदिर मौजद है। इसके अलावाए यहाँ स्थित 17वीं शताब्दी का राम.जानकी मंदिरए 18वीं शताब्दी का हाथी दरवाजाए छोटा खजराहो के रूप में ख्यात सोमेश्वर मंदिरए गरुड स्तंभए पांडव कंडए ब्रह्म कंडए सतधाराए दीपेश्वर मंदिरए शारदा मंदिर व लक्ष्मीनारायण मंदिर इतिहास का जीवंत दस्तावेज हैं। यहाँ के कदरती नजारों के आकर्षण की वजह से ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया बचपन में लाव.लश्कर के साथ यहाँ महीनों रहती थीं। यहाँ स्थित रानी कोठी सिंधिया घराने ने ही बनवाई है। वहीं गरुड स्तंभ को परातत्व विभाग ने संरक्षित स्थल की मान्यता दी है। हरे रंग का यह पत्थर राजा अशोक के समय का है। इस पर विष्ण के 24 अवतारों का चित्रांकन है। बरमान मेले का महत्व नर्मदा नदी की वजह से भी है। स्कंद पराण में उल्लेख है कि ब्रह्मा ने नर्मदा तट के सौंदर्य से अभिभत होकर यहाँ तप कियाए इस वजह से ब्रह्मांड घाट कहलाया। कालांतर में ब्रह्मांड घाट का अपभ्रंश बरमान हो गया। यहाँ के पांडव कंड के बारे में कहा जाता है कि वनवास के समय जब यहाँ पांडव ठहरे तो उन्होंने एक कंड में

नर्मदा का जल लाने का प्रयास कियाए वह पांडव कंड बन गया। पास में ही पांडव गफाएँ हैं। वहीं सर्य कंड व ब्रह्म कंड के बारे में मान्यता है कि इसमें स्नान करने से कष्ठ रोगए चर्म रोग व मिर्गी दर होती है। नर्मदा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए **लोक परंपरा का गीत बंबलिया** (नर्मदा नदी के महत्व को दर्शाने के लिए गाए जाने वाला गीत) सिर्फ नरसिंहपर जिले में ही गाया जाता है। यह एक ऐसा सामहिक गान है जो यहाँ के अलावा नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक से लेकर भरूच की खाडी तक कहीं भी सनने को नहीं मिलता। मेले में प्रमख तौर पर कषि यंत्र लोहे. पीतल व ताँबे पत्थर से बनी मर्तियाँ सिलबट्टे गाय एवं बैलों को सजाने की सामग्री सदैव आकर्षण का केंद्र रहे। वहीं सर्कसए झले मौत का कआँए मीना बाजार आदि ने भी लोगों को अपनी ओर खींचा। यह मेला करीब ढाई सौ हेक्टेयर क्षेत्र में लगा है। अब इस मेले में इसमें कपडे ज्वेलरी फर्नीचर बर्तन किराना मिठाइयाँ मनिहारी सामान इलेक्टॉनिक इलेक्टिक उत्पाद चमडे से बनी वस्तओं का विक्रय भी शरू हो गया है।

### 4- परहंसी झौतेश्वर का मेला-

जिला मख्यालय से 56 किलोमीटर की दरी पर गोटेगांव विकासखण्ड में झौत नामक गॉव ( परमहंसी) में बसंत पंचमी के अवसर पर आयोजित किया जाता है। द्विपीठाधीश्वर जगदगरू स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज के द्वारा यहॉ पर मां राजेश्वरी भगवती मां त्रिपर सदंरी का भव्य व विशाल मंदिर बनाये जाने के बाद से स्थान पर धार्मिक महत्व और ही बढ गया है। यहां देश के कोने कोने से श्रद्धालजन यहां आकर पर्ण लाभ प्राप्त करते है।

### 3- जबरेश्वर ( शंकर ) भगवान का मेला-

नरसिंहपर से 14 किलोमीटर दरी पर पिपरिया गांव में बसंत पंचमी के अवसर पर जनपद सभा द्वारा आयोजित होता है। इस स्थान को महादेव पिपरिया भी कहते हैं। यहां छह फिट लंबे तथा 11 फिट मोटा शिवलिंग स्थापित है। कहते है। कि ग्रामीण को यह शिवलिंग नर्मदा में प्राप्त हआ था जिसकी स्थापना के लिए उन्होने एक भव्य बारात का आयोजन किया था। यहा शिवलिंग के साथ ही भगवती पार्वती की प्रतिमा भी स्थापित की गई थी। ऐसा भी कहते है. कि यह स्थापित लिंग पहले छोटा था. जो धीरे धीरे बढकर आज की स्थिति में है। धारणा है कि बसंत पंचमी को नर्मदा जी का जल भगवान शंकर को चढाने से धन -धान्य एंव संतान की प्राप्ति होत है।

### 2- मिढवानी माता का मेला-

यह मेला गाडरवारा तहसील के बोहानी गांव में प्रतिवर्ष चैत्र माह में नवरात्रि के अवसर पर दस दिनों के लिए

पंचायत द्वारा आयोजित किया जाता है। यह मेला मां दर्गा की उपासना के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाता है। आसपास के गांवो के हजारों लोग इस मेले का लत्फउठाते है। इस मेले में कषि कार्य उपयोगी वस्तएं. घरेल सामान आदि की दकानें लगती है। मनोरंजन के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते है।

## 5- नरसिंहपर में नर्मदा कंड ( झरना ) मेला-

नगर के नर्मदा झिरना में मंकर संक्रांति पर दो दिनों आयोजित किया जाता है। यहां कई कंड है जिनका जल स्त्रोत नर्मदा को माना जाता है। किवदंती है कि यहां एक महात्मा जी निवास करते थे जो प्रतिदिन यहां से छह किलोमीटर दर स्थित ग्राम केरपानी में स्नान करते थे लौटन पर पजन-अर्चन के पश्चात अन्य आदि ग्रहण करते थे। उनका यह क्रम कई वर्षों तक जारी रहा। एक बार महात्मा जी अस्वस्थ हो गए. किसी भी तरह वे स्नान हेत नर्मदा पहंच तो गए. लेकिन बीमारी के कारण उनकी शक्ति इतनी क्षीण हो गयी थी कि लौटने में परेशानी हो रही थी। यहां महात्मा जी को नर्मदा मां ने दर्शन दिये और कहा कि में तम्हारे स्थान पर मिलगी और कछ निशान छोड जाने का कहा। महात्मा जी नर्मदा मे अपना डंड- कमंडल छोडकर आए. लौटने पर उन्हें विश्वास नही हआ तब रात्रि में मां नर्मदा ने स्वप्न दिया और कहा कि विश्वास कर अमक स्थान की खदाई करो में तम्हें वहां मिलगी। खदाई करने में एक जल स्त्रोत का भंडार फल पडा तथा उसमें महात्मा जी के डंड कमंडल भी निकले।

## 6- सांकल घाट का मेला -

आद्य गरू भगवान शंकराचार्य के गरूदेव गोविंद भगवत्पाद पण्य सलिल नर्मदा के तट पर तपस्या और साधनारत थे। उनकी खोज में आचार्य शंकर ने नर्मदा क्षेत्र का भ्रमण किया। गरूदेव का सानिध्य प्राप्त कर उनसे दीक्षा लेकर अपने संकल्पो के अभियान पर अग्रसर हए। नर्मदा तट पर गरू गोविंद भगवत्पाद की गफा के स्थित होने के जो भौगोलिक एवं प्राकतिक तथ्त शंकर दिग्विजय ( रचियता माध्वाचार्य ) नामक ग्रंथ के सर्ग पांच के श्लोक क्रमांक 90.91.92.तथा 93 में उल्लेखित है। उनमे संगीत मिलाते हए नरसिंहपर जिले के सांकलघाट स्थित गफा के आद्य शंकराचार्य के गरूदेव की गफा स्वीकार किया गया है। इस ग्रंथ में नर्मदा तट पर संकरे मख वाली किंत भीतर जाकर बडी होने वाली एक गफा का उल्लेख है। प्राचीन ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर परात्व व इतिहास के विद्वानों और गजेटियर के उल्लेखों में भी जिले स्थित सांकलघाट को शंकरघाट का अपभ्रंश स्वीकार किया गया है। यहां की प्राचीन गफा को आद्य शंकरचार्य की गरू की गफा के रूप माना है। द्वारा -शारदा पीठाधीश्वर

जगद्गरू स्वामी स्वरूपानंदजी सरस्वती द्वारा गफ्ा को वास्तविक गफ्ा स्वीकार करते हए उसके विकास की योजना में 108 एकड में गोविंद वन लगाने एंव आद्य शंकराचार्य की प्रतिमा की स्थापना की घोषणा की गई है।

### 7- देव श्री शक्ति गणेश मंदिर का मेला -

नगर के ऐतिहासिक देवश्री शक्ति गणेश मंदिर में तिल चतर्थी पर भी एक दिवसीय मेला लगता है। जहां बडी संख्या में भक्तजन पहचते है और भगवान लंबोदर को तिल का भोग चढाकर मेले में खरीददारी करते है। और रात्रि विश्राम कर भजन कीर्तन रामधन आदि को सामहिक रूप से गाते हैं। इन गायिकी में **भगतें** (देवी गीत) प्रमख होती हैं।

## जनपद की मढई

मढई मेले का छोटा रूप है. जो कि किसी भी बडे ग्राम में आयोजित किया जाता है ऐसा ग्राम जिसके आज बाज लगभग 100-50 छोटे ग्राम बसते हों। मढई में भी वही जरूरतों की सारी चीजें उपलब्ध होती हैं जो बडे मेले में उपलब्ध रहती हैं। बस इनका पैमाना या स्वरूप छोटा होता है। सामान्यत: ये मढई श्रावण के महिने में दीपावली. शिवरात्रि के समय में भरी जाती है। इन मढई में आदिवासी समदाय की भागीदारी ज्यादा होती है।

# नरसिंहपर जनपद से जडी शख्सियतें

## पंडित भवानी प्रसाद मिश्र

पंडित भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च 1913 को नरसिंहपर जिल से लगे हये होशंगाबाद जिले के ग्राम तिगरिया में हआ था. प्रतिष्ठित कवि लेखक सन 1985 में अपने रिश्तेदारों के यहाँ विवाह कार्यक्रम में आये हये थे और यहीं उनकी देहावसान 20 फरवरी 1985 को नरसिंहपर में हई। शरुआती दिनों में उनका इस जनपद में काफी आना जाना लगा रहता था. फिर दिल्ली में जाकर रहने लगे। आपने इस जनपद की रामलीला मंडलियों को भाषायी संस्कारों से परिचित कराते हये समद्ध किया। **( देशबंध समाचार पत्र की वेव साईट से )**

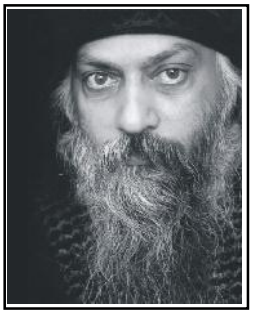

## डॉ. रामकमार वर्मा

सागर म.प्र. में जन्में हिन्दी एकांकी के जनक डॉ. रामकमार वर्मा का संबंध इस जनपद से रहा. उनके रिश्ते-नातेदार आज भी यहाँ प्रमख रूप से निवास कर रहे हैं. उनके अनसार- डॉ. साहब इस जनपद में काफी समय बिताते थे. उनके रिश्तेदारों प्राप्त जानकारी के अनसार डॉ. साहब ने कई बार यहाँ की रामलीला का मंचन भी देखा और इस बंदेला रामलीला को सराहा है।

**-शिवकमार वर्मा से प्राप्त जानकारी**

## आचार्य रजनीश

आचार्य रजनीश का वास्तविक नाम चन्द्रमोहन जैन था। रायसेन म.प्र. जिले के कचवाडा में आपका जन्म हआ था। आपके दादा तहसील गाडरवारा ( वर्तमान ) जिला नरसिंहपर के स्थायी निवासी रहे हैं। दादा के निधन के बाद रजनीष सात वर्ष की उम्र में गाडरवारा में निवास करने लगे आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा यहीं हई है. तर्क शास्त्री रजनीष अपना अधिकांश समय गाडरवारा की शक्कर नदी के किनारे ही बिताते थे. इसी शक्कर नदी के तट पर ओशोलीला आश्रम ( मत्यबोध स्थल ) बना हआ है। इसके बार में बताया जाता है कि चौदह वर्ष की अवस्था में ओशो को यहाँ मत्यबोध हआ था। इसे **प्रथम संबोधि** की संज्ञा दी गई है ओशो यहाँ बिना कछ खाये-पिये आठ दिनों तक रहे थे एवं मत्य की प्रतीक्षा की इस दौरान यहाँ जहरीले सांप ने भी आकर ओशो को नहीं डंसा लेकिन उन्हें साक्षात मत्य का अनभव हो चका था।

**पत्रिका- मैं नरसिंहपर हूँ... से**

## नरसिंहपर जनपद की बंदेली रामलीला का मंचन क्रम

रामलीला शरू होने से पहले सभी लोग अभ्यास स्थल पर एकत्रित होते थे। जहाँ पर भगवान गणेश की पजा होती थी और उस पजा में भगवान श्रीराम (पात्र) जो मकट धारण करते थे उसे भी पजा में रखा जाता था. पजा-पाठ सम्पन्न होने के बाद उम्र में छोटे अपनों से बडों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करते थे. तदपरांत व्यास जी (रामलीला संचालक/ निर्देशक)वस्त्रों की पेटी. धनष. मकट. पर्दे आदि का निरीक्षण करते. फिर संबंधित को काम सौंपकर अभिनेताओं से मखातिप होते फिर शरु होता नाट्य अभ्यास का सिलसिला। इनका नाट्य अभ्यास यही कोई श्रवण मास में रक्षाबंधन के बाद शरु होता. जो लगभग दो से ढाई महिने चलता अक्सर अभ्यास का समय रात्रि नौ बजे से रखा जाता था जो कि रात्रि 11-12 बजे तक चलता था। यह रामलीला शरुआती दौर में 15 दिन खेली जाती थी. जब रामलीला 15 दिनों तक खेली जाती थी तब मख्य अंकों के साथ क्षेपक कथाएं जैसे- जटायजी. केवट मिलन. अहिल्या उद्धार. विभिषण की गति को भी खेला जाता था। फिर ये धीरे-धीरे ये 9 दिन की हो गई। समय अभाव. धन का अभाव. अभिनेताओं की कमी इलेक्टॉनिक मीडिया के चलन ने इतना असर डाला कि रामलीला खेलने के दिन और कम हो गए। अब यह केवल 7 दिवसीय बची। जो लगभग 15-20 साल तक चली। अब रामलीला सविधा और साधन पर आधारित हो गई थी. रामलीला मंडलों को ये रामलीला क्यों छोटी करनी पडी इस पर हम आगे के अध्याय में विस्तार से चर्चा करेंगे।

ध्यान देने योग्य है कि मंडली ने शरुआत की परम्परा गणेश वंदना रामायण जी की आरती. मर्ति पात्रों की आरती (राम. लक्ष्मण और हनमान) को करना कभी नहीं छोडा। आरती होने के बाद थाली दर्शकों के मध्य घमती थी लोग (दर्शक) भक्तिभाव से आरती ग्रहण करते और चढोत्तरी चढाते यह आरती दो काम करती थी. पहला दर्शकों को धर्मलाभ एवं दसरा मंडल को आर्थिक सहयोग। इस दौरान मंच से भजन होता रहता था या खेले जाने वाले दश्य का विवरण प्रसारित किया जाता और अपने ही अंदाज में उसके महत्व को बताया जाता।और बीच-बीच में चंदा देने वाले नगरसेठों को धन्यवाद भी ज्ञापित किया जाता था।

## 15.9 और 7 दिवसीय खेले जाने वाली रामलीला का कथाक्रम निम्नानसार था-

### अ- 15 दिवसीय रामलीला का मंचन क्रम-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1- | प्रथम दिवस | - | रावण दिग्विजय एवं नारद मोह। (दोनों में कोई एक) |
| 2- | द्वितीय दिवस | - | राम जन्म |
| 3- | ततीय दिवस | - | मनि आगमन. ताडिका वध. मारीच सबाह वध |
| 4- | चौथे दिवस | - | नगर दर्शन फलवारी/सीता दर्शन/पष्पवाटिका |
| 5- | पाँचवे दिवस | - | धनष यज्ञ (सीता स्वयंवर) |
| 6- | छटवें दिवस | - | परसराम-लक्ष्मण संवाद एवं सीता राम-विवाह |
| 7- | सातवें दिवस | - | वन गमन/भरत मिलाप |
| 8- | आठवें दिवस | - | सीता हरण एवं राम विलाप |
| 9- | नौवें दिवस | - | हनमान राम भेंट. सग्रीव से मित्रता. शबरी भेंट |
| 10- | दसवें दिवस | - | बाली बध. सग्रीव का राज्य अभिषेक |
| 11- | ग्यारहवें दिवस | - | लंका दहन. लक्ष्मण हनमान संवाद. अंगद रावण संवाद |
| 12- | बारहवें दिवस | - | लक्ष्मण शक्ति |
| 13- | तेरहवें दिवस | - | कम्भकरण वध |
| 14- | चौदहवें दिवस | - | मेघनाथ वध. अहिरावण वध |
| 15- | पंद्रहवें दिवस | - | रावण वध. रामराज्य अभिषेक. विजय जलस (नगर भ्रमण) |

**मंचन अविध**- लगभग 4 घंटा (सायं 7.30 से 11.30 रात्रि तक)

## ब- 9 दिवसीय रामलीला का मंचन क्रम-

1- प्रथम दिवस - मनि आगमन. ताडिका. मारीच. सबाह वध
2- द्वितीय दिवस- धनष यज्ञ (सीता स्वयंवर)
3- ततीय दिवस - परसराम-लक्ष्मण संवाद एवं सीता राम-विवाह
4- चौथे दिवस - दशरथ प्रतिज्ञा
5- पाँचवे दिवस - कौशल्या विदाई
6- छटवें दिवस - पंचवटी. सीता हरण
7- सातवें दिवस - राम हनमान मित्रता. बाली वध
8- आठवें दिवस- लंका दहन एवं लक्ष्मण शक्ति
9- नौवें दिवस - कंभकरण. मेघनाथ वध. रावण वध एवं रामराज्य अभिषेक

**नोट**- खेल अवधि 2.30 से 3 घंटा। क्षेपक कथाओं मंचन हआ तो समय अवधि बढ जाती थी।

**मंचन अवधि**- लगभग 3 घंटा (रात्रि 8 से 11 बजे तक)

## स- 7 दिवसीय रामलीला का मंचन क्रम-

1- प्रथम दिवस - मनि आगमन. ताडिका. मारीच. सबाह वध
2- द्रितीय दिवस- धनष यज्ञ (सीता स्वयंवर)
3- ततीय दिवस - परसराम-लक्ष्मण संवाद एवं सीता राम-विवाह
4- चौथे दिवस - पंचवटी. सीता हरण
5- पाँचवे दिवस - राम हनमान मित्रता. बाली वध
6- छटवें दिवस - लंका दहन एवं लक्ष्मण शक्ति
7- सातवें दिवस - कंभकरण. मेघनाथ वध. रावण वध एवं रामराज्य अभिषेक

**खेल अवधि**- लगभग 2 घंटा 45 मिनिट (रात्रि 9 से रात्रि 11.45 तक)

**नोट**- यह रामलीला रामचरित मानस. राधेश्याम रामायण और आश दश्यों (Improvised Scenes) को आधार बनाकर तैयार की गई कति थी। जो गीत छंद. दोहा. चौपाई. शेर-शायरी और संगीत से यक्त थी. जिसे यह राधेश्याम तर्ज कहते थे। ज्ञात हो राधेश्याम तर्ज नौटंकी शैली जैसी ही होती है।

## बंदेली रामलीला के लेखक

फोटो

श्री तलसीराम जी अग्रवाल (बब्बा)

जन्म- ..... स्वर्गवास- .....

## व्यास गादी

फोटो

व्यास जी (संचालक रामलीला)
श्री चतर्भज अग्रवाल

फोटो

व्यास जी (संचालक रामलीला)
श्री शैलेन्द्र चौबे

# नरसिंहपर जनपद के ग्राम तेंदखेडा की बंदेली रामलीला

नरसिंहपर जनपद के तेंदखेडा ग्राम की बंदेलखंडी रामलीला परे जनपद में आकर्षण का केन्द्र रही है. इसके आकर्षण की वजह दश्यों को वास्तविक स्वरुप में पेश करना रहा है।

प्रारंभ काल से ही ग्राम तेंदखेडा कषि औजार एवं लोहे के उपकरण बनाने के लिये परे जनपद में प्रसिद्ध रहा है. वहां के क्रियाशील लोगों ने अपनी कल्पना एवं रचना शक्ति का उपयोग मंच पर भी करना शरु कर दिया. जैसे जब रावण लक्ष्मण रेखा को लांघने की कोशिश करता है. तो मंच पर तरंत आग जल उठती है. इसके लिये उन्होंने लोहे की एक नाली बनाई. और उसे तखत (**लकडी के प्लेटफार्म**) में फिट कर दिया. और उसमे पेटोल भर दिया। रावण जैसे ही पैर उठाता है. वैसे ही माचिस की तीली जलाकर उसमे वास्तवकि आग प्रकट कर दी जाती थी. लोहे के सरियो से गरुड बनाया जाता था. वास्वविक गरुण की तरह आकार देकर उसे सजाया जाता था. उस पर विष्ण भगवान( पात्र) बैठते थे। पल्ली एवं रस्सों की सहायता से उसे ऊपर खींचा जाता था. लोगों को गरुड के उडने का वास्तविक एहसास होता था। इसी तरह हनमान जी जब संजीवनी बटी लेने जाते हैं तो उस दश्य में भी हनमान को आसमान में उडते हये दिखाया जाता था. इसके लिये लोहे के मजबत पाइप पर हक एवं गिर्रियां( पल्ली) लगाई जाती थी. और उस पर हनमान जी हाथ में पर्वत लिये उडते हये दिखाये जाते थे. और भी अन्य कई चीजे थी. जैसे लोहे का विशाल शेषनाग बनाया जाता था. कमल का फल बनाते थे. और इन सब कारीगरी में बनावट नहीं दिखती थी. पर बडे-बडे जरुर दिखते थे।

ये बात 68 और 70 के दशक की है. जब हम लोग इस तरह का काम देखा करते थे. और भीड वाले दश्यो को हम लोगों को पाठ अदा करने का मौका मिलता था। मेरे पिताजी का भी इस राम लीला में काफी सहयोग रहता था. और इन्हीं सभी रोचकता के कारण अत्याधिक मात्रा में दर्शक इस रामलीला को देखने आया करते थे। उस समय गांव में फोटोग्राफी वगैरह की व्यवस्था नहीं थी. जबलपर में या इटारसी में एक-दो फोटो स्टडियो थे. जिनको बलाना काफी मंहगा पडता था. इसलिये आज हमारे पास कोई फोटो-बोट नहीं हैं। नवरात्रि के समय पर ये मंचन होता था. 15 दिन चलता था. रामलीला प्रारंभ होने के पहले शाम 6 बजे से ही चाबी से चलने वाला ग्रामोफोन बजने लगता था।

हमारे इस ग्राम में बिजली सन 1970 के लगभग आई। बिजली की चकाचौंध से रामलीला मंडल भी जगमगा उठा. और लीला में बल्बों पर रंगीन पन्नियां( कलर पेपर) बांधकर रंगो का प्रयोग शरु हो गया। लाल. पीली. हरी लाइटों का उपयोग रावण या राक्षसों के सीन में ज्यादा होता था. डर का दश्य दिखाने के लिये. माइक का प्रयोग शरु हो गया। कलाकारों का अब चीख-चींखकर नहीं बोलना पडता था. संवादों में मिठास आ गई। अब ध्यान अभिनय और भाव भंगिमा की तरफजाने लगा था। पहले तो यही चिंता रहती थी कि आवाज पहंच रही है या नहीं ? गांव में पर्दा प्रथा थी. लेकिन बंदेली रामलीला में बंदेलीखण्डी **दादरें. सोहरे** (संस्कारपरक गीत) और **गारी**[१] अगर महिलाएं न गाएं तो काहे की रामलीला।

मंच के पीछे पर्दे की आड में माइक लगा दिया जाता था. वहां पर महिलाएं घंघट ओडकर मधर कण्ठ से दश्य अनसार बंदेली गीतों का प्रयोग करती थी. खासकर राम विवाह पर जिवनार ( भोजन) के समय गायी जाने वाली गारी और सीता के द्वारा जयमाला पहनाने पर गाये जाने वाले बंदेलीगीत काफी लोकप्रिय रहे हैं। नवरात्रि के समय रामलीला की वजह से गांव की रौनक बढ जाती थी. लगभग गांव के हर घर में मेहमानों का डेरा होता था. क्योंकि वे केवल इस रामलीला को देखने आते थे. और अपने रिश्तेदारों के यहां रुकते थे। ये सोचकर दख होता है कि 25-30 साल से किस की नजर लग गई कि रामलीला बंद पडी है। मानो समय फिर खराब आ गया है. राम को फिर वनवास हो गया है।

**गारी**[१] - विवाह के समय मंडप के नीचे गाया जाने वाला गीत. गारी दो तरह की होती हैं. राम गारी और श्याम गारी. गारी से मतलब गाली से है. रामगारी में उपमाओं से विशेषताओं से. तारीफकी जाती है. वैसे ही श्याम गारी में व्यग्य और तंज कसे जाते हैं।

संदर्भ-

ग्राम तेंदखेडा के रामलीला कलाकार श्री परितोष दबे से बातचीत

**साक्षात्कार एवं संकलनकर्ता** - पनीत विक्रम त्रिवेदी

परियोजना नरसिंहपर जनपद की बंदेली रामलीला

**रामलीला से**

**जनपद से संबंधित**

**रामलीला से जडे हुए लोग**

**नोट- दिये हुए अध्यायों के अनसार शोध कार्य प्रगति पर है।**

परियोजना निर्देशक

**पुनीत विक्रम त्रिवेदी**

स्नातक नाटय विद्यालय-96

शंकराचार्य वार्ड. पी.जी. कॉलेज के सामने.

नरसिंहपर (मप्र) 487001

मो- 9425168605

**संदर्भ**

1- फिलिप मीडोस टेलर- एक ठग की दास्तान

2- जिले का गेजिटयर

3- नर्मदा प्रसाद खरे- बंदेली भाषा स्वरूप

4- प्रयास मेगजीन से 2001

5- पत्रिका- जी हाँ मैं नरसिंहपर हूँ 2012

6- पत्रिका- नरसिंह संदेश 2014 से

7- राधेश्याम रामायण

8- रामचरित मानस तलसीदास कत

9- लोगों की जानकारी के आधार पर

10- बंदेली लोकसाहित्य परम्परा और इतिहास- नर्मदाप्रसाद गप्त

**संलग्न**- राधेश्याम रामायण छायाप्रति एवं वीडियो सी.डी.